26.02.2021

श्रीमतभगवद्गीतानुसार योग की परिभाषा

भारत का प्राचीन सहज राजयोग जो दुनियाँ भर में प्रसिद्ध है, वह तो गीता-ज्ञान से ही आता है। गीता में भगवान ने बताया है- "अणोरणियांसमनुस्मरेत् यः" (गीता 8/9) अर्थात् आत्मा और परमपिता परमात्मा का स्वरूप क्या है। आत्मा अति सूक्ष्म अणुरूप बताई है जिसकी रोशनी आँखों में से निकल रही है। शरीर में आत्मा है तो आँखों में रोशनी है; आत्मा निकल जाती है तो आँखों की रोशनी खतम हो जाती है। इसलिए आत्मा ज्योति स्वरूप भी है, जो शरीर के उत्तम अंग भृकुटि में निवास करती है। इसलिए कन्याओं-माताओं द्वारा अपनी भृकुटि में बिंदी लगाने की परम्परा खास भारत में आज भी चली आ रही है जो आत्मिक स्मृति में टिकने की निशानी है और पुरुषों द्वारा युद्ध में जाते समय विजय पाने की निशानी भी टीका ही है। इसलिए युद्ध में जाने से पहले माताओं-कन्याओं द्वारा पुरुषों को टीका लगाया जाता है।

गीता (8/10) में भी लिखा है-''भ्रूवोर्मध्ये प्राणमावेश्य सम्यक्'' अर्थात् भृकुटि में प्राण-रूप आत्मा को भली-भाँति स्थिर करना चाहिए। यह ज्योतिस्वरूप अणुरूप आत्मा एक अत्यंत छोटी बैटरी के मुआफिक है, जो सृष्टि के आदि सतयुग से ही शरीर की इन्द्रियों के द्वारा सुख भोगते-2 कलियुग के अंत में बिल्कुल क्षीण हो जाती है। उस क्षीण हुई बैटरी को फिर से पावरफुल बनाने के लिए विशालतम चैतन्य जनरेटर के रूप में परमपिता शिव निराकारी आत्माओं के लोक परमधाम से इस मनुष्य-सृष्टि पर भारत में आकर कलियुग के अंत में खास भारतवासियों को और आम सारी सृष्टि के मनुष्यों को गीता-ज्ञान देकर आत्मा-परमात्मा और सृष्टि के आदि-मध्य-अंत के रहस्यों को समझाते हैं। भगवान बताते हैं कि जैसे आत्माएँ ज्योतिबिंदु हैं, निराकार हैं, वैसे परमपिता शिव भी निराकार, ज्योतिबिंदु है। आज भी उस शिव बाप समान बने शंकर की सारे भारत में बनी यादगारों में ज्योतिर्लिंगम् की बहुत मान्यता है।

जैसे चैतन्य आत्मा गर्भ में जड़त्वमय साकार शरीर में प्रवेश करती है वैसे परमपिता शिव भी मनुष्य-सृष्टि के हीरो पार्टधारी अर्जुन/एडम/आदम या आदिदेव शंकर के शरीर रूपी तामसी तन में प्रवेश करते हैं और उनके द्वारा गीता-ज्ञान सुनाते हैं। जिसका यादगार चित्र सद्भाग्य का अर्जन करने वाले अर्जुन रूपी रथी और भगवान सारथी के रूप में इन्द्रियों रूपी घोड़ों की मन-बुद्धि रूपी लगाम पकड़े हुए गीता के मुख्य पृष्ठ पर दिखाया जाता है; परन्तु वह आकर्षणमूर्त भगवान कृष्ण नहीं है, वरन् शिव-शंकर भोलेनाथ ही हैं; क्योंकि वही 'कलातीत कल्याण कल्पांतकारी' हैं। वही ऐटमबमों से कल्प का अंत कराते हैं; इसलिए उनके नाम के आगे 'हर-2 बम-2' लगाया जाता है। वे आते हैं तभी ब्रह्मा द्वारा ब्राह्मण-देवताओं की नई सृष्टि की स्थापना के साथ-2 शंकर की प्रेरणा द्वारा ऐटमबमों का निर्माण भी कराते हैं। कृष्ण तो 16 कला संपूर्ण देवता है, कलातीत ज्ञानसूर्य भगवान नहीं। भगवान आकर बताते हैं कि मनुष्यों की आत्मा रूपी बैटरी जो कलाहीन कलियुग के अंत में अति तामसी बनने से क्षीण हो जाती है, उसे मुकर्रर शरीर रूपी अर्जुन रथ में आए हुए ज्योतिबिंदु परमपिता शिव की याद से ही 16 कला संपूर्ण देवता बनाया जा सकता है। ये कृष्ण की 16 कलाएँ सतयुग में ही होती हैं जिन्हें कलाहीन कलियुग के अंत में और 16 कला सतयुग आदि के पुरुषोत्तम संगमयुग पर स्वयं भगवान ही सहज राजयोग सिखाकर सम्पन्न बनाते हैं।

तात्पर्य यह है कि मनुष्यात्माएँ परमपिता शिव के साकार अर्जुन-रथ में निराकार सदाशिव-ज्योति रूप को पहचान कर और अपने को अणु ज्योति रूप आत्मा समझते हुए ही भगवान से योग लगाकर सतयुग के आदि में नर से नारायण जैसा बन सकती हैं। यही गीता में राजविद्या, राजयोग का उपदेश है।

गीता के नौवें अध्याय में भगवान ने बताया है-

राजविद्या राजगुह्यं पवित्रमिदमुत्तमम्। प्रत्यक्षावगमं धर्म्यं सुसुखं कर्तुमव्ययम्।। 9/2

यह {एडवांस गीताज्ञान} राजाओं की विद्या है, राजाई का रहस्य है, {अत्यंत} पवित्र है, {विधर्मियों की अपेक्षा} सर्वोत्तम {ज्ञान है}, {सिर्फ इस पु. संगमयुग में} {साक्षात् ईश्वर से प्रश्नोत्तरपूर्वक} प्रत्यक्ष जाना जाता है, {पालन} करने के लिए अत्यंत सुखदायी है, अविनाशी है {और सत्य-सनातन} धर्मानुकूल {भी} है।

मनुष्यमात्र जो अपन को देह समझ बैठे हैं, वे इसी उपदेश के माध्यम से अपनी ज्योतिबिंदु आत्मा का योग निराकार सो साकार ज्योतिलिंगम् (ज्योतिबिंदु) परमपिता+ परमात्मा से जोड़ सकते हैं और 16 कला संपन्न, संपूर्ण निर्विकारी, संपूर्ण अहिंसक, मर्यादा पुरुषोत्तम देवता बन सकते हैं। इसके लिए "अभ्यासेन तु कौन्तेय वैराग्येण च गृह्यते।" गीता का उपदेश है (गीता 6/35) ज्योतिबिंदु आत्मा और परमात्मा की एकाग्र याद के बिना मनुष्यात्माओं को कोई ईश्वरीय प्राप्ति नहीं हो सकती। इसके अलावा मनुष्य-गुरुओं द्वारा बताया हुआ और कोई उपाय नहीं है। ये आसन-प्राणायाम देह के योग हैं, देह का भान बढ़ाने के योग हैं। इनसे आत्मा की सद्गति नहीं हो सकती, इनसे मनुष्य की मैंटेलिटी गिरती रही है और गिरती रहेगी। इसलिए जल्दी ही सन्नद्ध महाभारत के बाद होने वाले महामृत्यु रूपी साक्षात् सामने खड़े आखिरी एटॉमिक चतुर्थ विश्व युद्ध महाविनाश से पूर्व ही ओरली गीता ज्ञान द्वारा भगवान कहते हैं- "सर्वधर्मान् परित्यज्य माम् एकम् शरणम् व्रज" (गीता 18/66) अर्थात् हिन्दू, मुस्लिम, सिक्ख, ईसाई आदि- इन सब धर्मों को छोड़कर मेरी शरण में आ जा। अब कलियुग के अंत में इन सब धर्मों के आधार पर बनाए गए अनेकानेक कर्मकांडों की युद्धभूमि में फिर से कल्प (चतुर्युगी) पूर्व की तरह वही "धर्मक्षेत्रे कर्मक्षेत्रे समवेता युयुत्सवः" (गीता 1/1) वाली महाभारी महाभारत के तृतीय विश्वयुद्ध में खून की नदियाँ बहाने वाली विकराल परिस्थिति सामने खड़ी है और गुप्त रूप में नई स्वर्गीय दुनियाँ की स्थापना का पार्ट बजाने वाले आए हुए निराकार सो साकार भगवान भारतीय कौरवों-पांडवों और विदेशी यादवों(यवनों)-क्रिश्चियंस आदि के बीच युद्धक्षेत्र में शीघ्र ही प्रत्यक्ष होने वाले हैं।

गुप्त वेश में सतयुग रचने आए शिव भगवान। अब तो जाग-2 इंसान।

नाहं प्रकाशः सर्वस्य योगमायासमावृतः। मूढोऽयं नाभिजानाति लोको मामजमव्ययम्।। 7/25

योगमाया से ढका हुआ मैं {शिवबाबा} सब {आत्माओं} के लिए प्रगट नहीं हूँ। यह {'श्रुतिविप्रतिपन्ना' (गीता 2-53)} मूर्ख संसार मुझ अगर्भा, अविनाशी {सदा शिवज्योति समान बने बाबा विश्वनाथ} को नहीं जान पाता।

<u>कलियुग जाने वाला है; सतयुग आने वाला है।</u>

कोई हँसने वाला है, कोई रोने वाला है । पर्दा उठने वाला है, तमाशा होने वाला है ।।